सी. एस. पीअर्स
विलियम जेम्स

अर्थ तथा सत्य के अर्थक्रियात्मक सिद्धांत
Pragmatic theories of meaning and truth

→ अर्थक्रियावाद / उपयोगितावाद / प्रैगमैटिज्म शब्द को प्रचलित करने का श्रेय विलियम जेम्स को जाता है।

→ उपयोगितावाद के उद्भव मूलतः एक प्रतिवाद के रूप में पर अतिवाद निरपेक्षवाद / आदर्शवाद (Absolute Idealism) के विरुद्ध (हेगल Hegel के मत के विरुद्ध)

→ यह ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से भी प्रतिवादी है क्योंकि यह बुद्धि को वह ~~स्थान~~ केंद्रीय स्थान नहीं देता जो उसे हेगेल के दर्शन में प्राप्त है।

→ यह तत्वमीमांसीय दृष्टि से भी प्रतिवादी है। क्योंकि तत्वमीमांसक सत् के स्थान को गौण मानता है।

→ उपयोगितावाद की मूल मान्यता है कि कोई भी ज्ञान अथवा विचार सत् तभी होगी जब कि उसका उपयोग हो अर्थात उसका फल सकारात्मक होना चाहिए।

→ जेम्स की मान्यता है कि पूर्णतः शाश्वत सत् की खोज निरर्थक है।

→ सत्यता का आधार उसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है।

→ वैसे सत्यता के संबंध में तीन सिद्धांत हैं —

* (1) संवादिता सिद्धांत (Correspondence theory)
(2) संसक्तता सिद्धांत (Coherence theory)
(3) उपयोगितावादी सिद्धांत (Pragmatic theory)

जेम्स धारणा के संबंध में बातें —

(1) सत्ता अनुभूत होती है। अनुभव में ही ज्ञात होती है।
(2) सत्ता अनुभवातीत नहीं होती है।
(3) सत्ता का कोई शाश्वत रूप नहीं। अनुभव आधारित होने के कारण वह परिवर्तनशील है।
(4) जेम्स सत्ता की अनेकता में विश्वास करता है।